Mind and Society, ISSN 2277-6907
Vol.08, No. I & II, March & June 2019, Page No.91 to 97

हिन्दी साहित्य में नारी पात्रों का मनोविज्ञान

* रेखा चौधरी

Received	Reviewed	Accepted
06 June 2019	10 June 2019	11 JUne 2019

नारी मनोविज्ञान के संबंध में नारी मनोभावों के विभिन्न पक्षें में अचेतन, काम, अहम, अंतर्द्वन्द, हीनता, श्रेष्ठता, आत्मपीड़न, परपीड़न, कुन्ठा की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। मानव मन के विभिन्न स्तरों पर नारी मन की व्यथाओं, भावनाओं संवदनाओं के विभिन्न पक्ष इन उपन्यासों में उभर कर आते है। इन उपन्यासों में पात्रों की गहन मानसिक प्रक्रिया को उपन्यासकारों ने स्पष्ट किया है साथ ही इन नारी मन और उनके व्यक्तित्व के मूल द्वन्दो को व्यक्त किया हैं इस अध्ययन में जो मनोवैज्ञानिक उपनन्यास चुने गये उनके मार्मिक जीवन की जटिलता के कारण युवा मनोविज्ञान, व्यक्तित्व मनोविज्ञान और असामान्य जीवन की अभिव्यक्तियां दृष्टिगोचर होती हैं लेखिकाओं ने नारी जीवन में निहित विसंगतियों को उजागर किया है जिनमें वह मानसिक अतृप्ति का शिकार है। इनके उपन्यासों की विशेषता यह है कि इन्होंने आत्मीयता का अभाव और पीढ़ियों के अंतर की समस्याओं का चित्रण भी किया है। लेखिकाओं ने नारी स्वतंत्रय और उसकी मुक्त जीवन शैली को लेकर भी अनेक उपन्यास लिखे है। वर्तमान युगीन नारी की संवेदनाओं और मनोभावों का सूक्ष्म अंकन इनके उपन्यायों में हुआ हैं। नारी की मानसिकता का, जहां इन्होंने यथार्थ अंकन किया है वहीं उसके भीतर के अहं को भी स्पर्श किया हैं। लेखिकाओं ने आज की आधुनिक नारी की मनः स्थिति का चित्रण करते हुए अपने उपन्यासों के माध यम से आज की पढ़ी लिखी नारी अपने व्यक्तित्व की रक्षा करने में कितनी समर्थ है इसका भी उल्लोख किया है।

प्रस्तावनाः

व्यक्ति समाज और साहित्य के विकास की प्रकिया एक दूसरे पर निर्भर होती हैं। किसी भी परिवर्तन का प्रभाव व्यक्ति के मन पर होती है और व्यक्ति का मन साहित्य के माध्यम से व्यक्त होता है। साहित्य एक मनोविज्ञान है जो प्रेम, सौहार्द, ममता, आदर्श, सच्चरित्रता, सदाचार, स्वच्छ मानसिकता आदि का अस्तित्व दिखाता है। वहीं दूसरी ओर नारी का भी मनोविज्ञान है जो विकृति, कुंठा, डर, संत्रास, विलासता, भ्रष्टाचार, दुराचार, वेश्यावृत्ति, रूढ़िवादिता, तलाक, बेमेल विवाह आदि जैसी समस्याएं दिखाता है। नारी मनोविज्ञान और नारी संबंधी मनोविज्ञान में भी बदलाव आया। नारी में नया आत्मविश्वास निर्माण हुआ। स्वयं नारी की मानसिकता भी बदलने लगी। इस परिवर्तन का परिणाम साहित्य में दिखाता है।

नरी ने अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को, प्रष्ठिता को अपनी पूरी ईमानदारी के साथ अर्जित किया है। आज की नारी ने यह सोच लिया है कि वह नारी, नारी–पुरूष का भेद–भाव नहीं चलने देगी, क्योंकि पुरूष और नारी दोनों समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं। इन दोनों के व्यक्तित्व के विकास में समाज का विकास है। नारी पर होने वाले अन्याय और भेदभाव पूर्ण व्यवहार, तो आज की आधुनिक नारी सहेगी नहीं। नारी मनोविज्ञान के ये विविध रूप, मुख्य रूप से इस

* *Director RCE technology Pvt. Ltd, Bangalore, India*

प्रकार है– माता के रूप में नारी, अधेड़ नारी, कामकाजी नारी, आधुनिक नारी, नारी से शोषित नारी, यौन हिंसा से पीड़ित नारी, जुल्म सहती नारी, स्वतंत्र प्रवृत्ति की नारी, अविवाहित नारी, दांपत्य संबंध और नारी, जुल्मों का विरोध करती नारी, इस प्रकार भिन्न–भिन्न नारी मनोविज्ञान को लेकर लेखिकाओं ने कई सारे उपन्यास लिखे। यह स्वीकार करना पड़ेगा कि लेखिकाओं ने नारी मनोविज्ञान के माध्यम से उन्हें न्यास देने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है।

मता–पिता के भेदभाव से ग्रस्त नारीः

माता पिता के भेदभाव से ग्रस्त नारी मनोविज्ञान को स्पष्ट किया है। भारतीय समाज, पुरूष प्रधान समाज है। इसलिए माता पिता, संतानों में पुत्र को ज्यादा महत्व देते है। आज माता पिता के समक्ष कन्या के जन्म लेते ही समस्या खड़ी हो जाती है। एक पिता का घर होता है जहां वह जन्म लेती है जो आगे चलकर भाई लोगों का घर होता है। दूसरा पति का घर होती है उसकी पूरी जिन्दगी गुजरेगी, आगे चलकर बेटे का होता है, उसका घर कौन सा है ? प्रश्न–प्रश्न ही रह जाता है।

इस प्रकार माता पिता स्त्री और पुरूष में किये जाने वाले भेद–भाव के कारण अनेक भावुक स्त्रियां बचपन से ही कुंठा को झेलती हुई जीती है जो विरोध करना नहीं जानती वे समझौता कर लेती है इस प्रकार माता पिता के भेद–भाव से नारी अंदर ही अंदर घुटती और टूट जाती है। इस समस्या को लेकर मनोविज्ञान का पता चलता है और कई महिला लेखिकाओं ने इस पर उपन्यास भी लिखे हैं।

नारी से शोषित नारीः

नारी का शोषण निरंतर चलता रहता है। कभी पुरूष से कभी स्वयं नारी की कभी–कभी नारी का शोषण करने लगती हैं कभी सास बहु कभी ननद भाभी। दोनों ओर से शोषण का शिकार नारी कहां जाएं। आखिर नारी–नारी का ही शोषण कैसे करती है, और क्यों करती है यह प्रश्न है? ऐसा वह शायद पुरूष से है, क्योंकि जो अधिकार उसे उस पुरूष से मिलना हो, वह चाहे पिता, पुत्र, पति क्यों न हो। अगर वह अधिकार उसे नहीं कराती तो इस अधिकार का जिम्मेदार वह भोली स्त्री, पुरूष को नहीं ठहराकर दूसरी स्त्री को मान बैठती है और उस स्त्री से नफरत करने लगती है और शोषण पर उतर आती है।

गीतांजलि के उपन्यास ''माई'' में नायिका माई का उसकी सास द्वारा शोषण किया जाता है वह हर छोटी–बड़ी बात में ''मांई'' को ताने देती रहती है–''वह माई को कोसने लगती खोटा सिक्का हमरे कपाले मर दिहलन, हा नहीं त।''[1]

यौन हिंसा से पीड़ित नारीः

नारी का शोषण हर प्रकार से होता है– मानसिक स्तर पर, भावनाओं के स्तर पर आदि परन्तु सबसे ज्यादा नारी का शोषण उसकी देह के साथ किया जाता है। नारी देह पर पुरूष अपना पूर्ण अधिकार मानता है। नारी की इच्छा हो या न हो उसे हासिल करना चाहता है। एक साथ रहकर भी पति–पत्नी में अलगाव की कसक है। इसलिए पति–पत्नी एक दूसरे के प्रति अपना फर्ज निभाते है।

कई उपन्यास में नारी बचपन में अपने सगे भाई की वासना का शिकार होती है, यौन अवस्था में आते ही अपने प्रोफेसर द्वारा यौन हिंसा का शिकार होती है फिर भी उसकी जिन्दगी जीने की विवश्ता ही उसका मनोविज्ञान है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास ''कठगुलाब'' में स्मिता कश्यप को एक दिन उसका जीजा खाट में बांधकर उसके मुंह में कपड़ा ठूंसकर तेज रोशनी में और बहुत बड़े आईने के सामने उस पर बलात्कार करता है। परन्तु अपने चश्मे के नंबरं के कारण वह बलात्कारी व्यक्ति को सही से देख नहीं पाती कि यह बलात्कार जीजा ने किया है? उसके बावजूद उसमें जीवन जीने की जीविटता है यहां पर बलात्कारिता स्त्री का मनोबल दिखाई देता है कि चाहे वह शारीरिक स्तर पर कमजोर भले ही हो पर मानसिक स्तर पर वह कमजोर नहीं हैं। वह आज भी जीवन को नये सिरे से जीना चाहती है और जी रही है।

काममूलक संवेदनाः

नारी के लिए प्यास का अर्थ है– अपने प्रिय के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देना। पुरूष के लिये प्रेमिका संवेदना के समान एक मूल्य होती है, जिसे वह अपने अस्तित्व में एकाकार कर लेना चाहता है। प्रेम एक ऐसी कोमल भावना है। जो युवा अवस्था में उद्दीप्त होती है, और निरंतर चलती रहती हैं शादी से पहले किया गया प्रेम शुद्ध प्रेमभाव होता है, या केवल वासना रहती है, परन्तु युवा अवस्था में भावनाओं पर काबू करना आसान काम नहीं है। कई लेखिकाओं के उपन्यासों में काममूलक संवेदना का चित्रण किया गया है।

प्रभा खेतान के ''छिन्नमस्ता'' की प्रिया अपने पति नरेन्द्र के काम संबंधों का एहसास जतलाती है–''केवल रात के

पहर में ही नहीं, बल्कि रात, दिन शाम को बेवक्त कभी भी। पार्टी के लिए तैयार होकर हम निकलने वाले होते कि वह मुझे वापस कमरे में घसीट लेता''।[2] पत्नी की कामेच्छा न होने पर भी पत्नी को पति की कामेच्छा पूरी करनी पड़ती है। यह उपन्यास भारतीय नारी की मानसिकता को प्रिया के माध्यम से दर्शाता है।

जुल्म सहती नारीः

जुल्म सहती नारी की जीवन की विविध समस्याओं का अकंन करते हुए नारी के विविध रूपों को चित्रित किया है। नारी के अतिरिक्त उन्होंने बिखरे दांपत्य पीड़ा को झेलने वाली नारी, कलंकिता नारी, अन्तर्जातीय विवाह के कारण निर्मित समस्याओं को झेलने वाली नारी आदि का यथार्थ निरूपण अंतिम दो दशकों की लेखिकाओं के उपन्यासों में किया गया है। इन स्थितियों का सामना करते हुए उसे मानसिक और शारीरिक जुल्म को भी सहन करना पड़ता है।

प्रभा खेतान के उपन्यास ''छिन्नमस्ता'' की प्रिया को उसके पति नरेन्द्र द्वारा थप्पड़ मार जाता है जिसका वह स्वयं और उसके ससुराल वाले भी विरोध नहीं करते हैं। यहां पर जुल्म सहती नारी का मनोविज्ञान है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास ''कठगुलाब'' में स्मिता का पहले जीजा द्वाराा शारीरिक शोषण होता रहता फिर बलात्कार जिम जानविन द्वारा उसकी अवमानना, शारीरिक शोषण, पति द्वारा मारपीट, मनोविश्लेषण के हथियार के रूप में मारपीट, मनोविश्लेषण के हथियार के रूप में इस्तेमाल, गर्भस्थ शिशु का गिर जाना, अपनी बहन का झूठ, सब कुछ वह सहती रहती है यह सब स्थिति नारी की मानसिकता को दर्शाती है।

शिवानी के अतिथि उपन्यास में जया की नौकरानी कुसमा का पति कुसमा के साथ मारपीट करता है। वह कुसमा की पीठ की चमड़ी उधेड़ देता है। जया उसके पति को डाटना चाहती है लेकिन कुसमा का पति प्रेम आड़े आ जाता है। कुसमा जया से कहती है– नहीं नहीं जीजी, तुम्हारे गोड़ गिरे, उन जिन डाटियोकृकृ मारे को तो हक है उन्हें हमार मरद है न फिर भी बहुत प्यार करते है हमसे।'' [3]

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास ''आत्म कबूतरी'' में अल्मा पिता की मृत्यु के बाद सूरज भान जैसे राजनेता के चंगुल में फंस जाती है जो मंत्रियों और बड़े लागों को लड़कियां पेश करता है। वहां से अल्मा भागकर समाज कल्याण मंत्री श्रीरामशास्त्री के पास पहुंच जाती है इस उपन्यास में अल्मा पर समाज द्वारा हुए जुल्मों का, और उस स्थिति में उसकी की मानसिकता का चित्रण हुआ है।

इन लंखिकाओं ने आज की नारी की प्रेम समस्या, विवाह समस्या, दहेज समस्या, बलात्कार की समस्या, विधवा समस्या, शोषण समस्या और नारी सबंधी कई तरह के जुल्मों का चित्रिण किया गया है।

स्वतंत्र प्रवृत्ति की नारीः

आज के शिक्षा प्रसार माध्यम तो नारी को पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहने की प्रेरणा देती है। अनेक संगठनों द्वारा नारी को सशक्त और सबल बनाने और सबल बनाने की चेष्टा चल रही है। इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप आज नारी आवाज उठा सकी है।

प्रभा खेतान के उपन्यास ''पीली आंधी'' में सोमा एक स्वतंत्र विचारों वाली कान्वेंट की पढ़ी लिखी लड़की है जब ताई जी द्वारा उसे करवा चौथ का व्रत रखने को कहा जाता है तो वह कहती है–''ताईजी मैं खाए बिना रह जाऊंगी, लेकिन चाय के बिना खाली पेट नहीं रह सकती।'' क्यों नही रह सकती एक दिन चाय नहीं पियोगी तो क्या प्राण निकल जाएंगे? आप ऐसा ही सोचिए।[4]

मृदंला गर्ग के उपन्यास ''अनित्य'' में प्रभा आजाद ख्याओं की लड़की है। एक पुरूष जितना घर से जुड़ा होता है उतनी ही वह जुड़ी हुई है जितना वह बाहर का होता है उतनी ही वह बाहर की है। बेखबर, घर में बैठे–बैठे आराम से कोई चीज हाथ में मांगने में कोई हिचक नहीं (पुरूष जैसे) किसी प्रकार का अपराध भाव नहीं। उसकी बेहिसाब सहेलियां हैं। खुले आम घूमती हैं। घर देरी से लौटती है पिक्चर, सैर,सपाटे खूब पसंद करती है। आम आदमियों की हक की लड़ाई लड़ने के लिये वह सारी सुविधाओं का त्याग कर देती है। मृदुला गर्ग के उपन्यास ''अनित्य'' में असीमा एक आत्मनिर्भर धाकड़ लड़की थी। उसका मानना है कि नारी के शोषण का एक कारण उसकी शारीरिक कमजोरी है। इसलिए आसीमा औरतों की प्रगति के लये उनके लिए नई–नई योजनाएं बनाने का काम करती है। मरने के बाद आदमी की चिता को अग्निे देने का अधिकर सिर्फ लड़के का होता है इस रूढ़ि को भी वह नकार रही थी। अपनी मां की चिता को अग्नि असीमा ही देना चाहती थी क्योंकि वक स्वतंत्र प्रवृत्ति की नारी है और उसकी अपनी अलग मानसिकता है।

शिवानी के उपन्यास ''कालिन्दी'' में कालिन्दी के विवाह के समय लड़के वाले बाकी की बची हुई दहेज की रकम की

मांग करते है तथी कालिन्दी चंडी के रूप में द्वार पर आती है और वर पिता को दरिद्र, शराबी, भिखारी आदि उपाधियों से विभूषित करते हुए कहती है–''श्रीमान आपका बेटा हमें नहीं खरीदना है, जाईये इसी क्षण बारात लौटा ले जाइये– और वहीं बेच आइये बड़ा आश्चर्य है कि इतने बड़े समृद्ध व्यापारी होने पर आपको अपना बेटा बेचना पड़ा वह भी कुल अस्सी हजार में.....।[5]

शिवानी के उपन्यास अतिथि में जया का पति हनीमून के समय शराब के नशे में जया के पिता के बारे में बुरा–भला कहता है। तो जया अपने पति से कहती है कि –''मेरे बाबू से इतनी ही नफरत थी तो क्यों गए थे आपके पिता जी गिड़ गिड़ाकर मेरा रिश्ता मांगने''?[6] और फिर हनीमून से लौटकर जया गुस्से में अपने मायके रहने चली जाती है।

राजी सेठ के उपन्यास निष्कवच में मार्था एक विदेशी महिला है जो पूर्ण रूप से स्वतंत्र विचारों वाली है। मार्था ने नायक का विदेश में रहने के लिये नौकरी दिलाई, घर दिया और बदले में उससे मन और शरीर दोनों ले लिए जब वह उसके बच्चे को गर्भ धारण करती है तो अबार्शन इएलिए करा लेती है कि होने वाली संतान लड़का है। –'' भला मैं क्यों उनकी नस्ल को बढ़ाना चाहूंगी–इन्होंने सदियों से हमें कुचल रखा''।[7]

अविवाहित नारीः

आज कल नारी विवाह के लिए उतनी उत्सुक नहीं है, जितनी पहले हुआ करती थी। कुछ महिलाओं के साथ यह भी होता है कि वे विवाह तो करना चाहती है मगर गरीबी, दहेज और अन्य ऐसे अनेक कारणों से उन्हें अविवाहित रहना समस्या का समाधान नहीं समस्या का आरंभ है। इस संदर्भ में कई महिला लेखिकाओं का वक्तव्य उल्लेखनीय है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास ''समय सरगम'' में अरण्या एक अविवाहित अधेड़ नारी अकेले अपने फ्लैट में रहते हुए जीवन से संघर्ष करती है। इस तरह अविवाहित नारी के जीवन जीने की मानसिकता संघर्षमयी हो जाती है क्योंकि उसे समाज से अकेले ही सामना करना पड़ता है।

परंपरावादी दर्षष्टिकोण और नारीः

परंपरावादी दर्षष्टिकोण में नारी एक लंबे समय तक की निराशा, घुटन को अंदर ही अंदर बेदखल करती चली जाती है। इस परंपरावादी दृष्टिकोण को अपने जीवन में किस तरह उतारती है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास ''अनित्य'' पति–पत्नी श्यामा और अविजित के संबंधों में गर्भाहट कम ठंडापन अधिक है। प्रथम रात्रि में ही श्यामा ने अविजित से कहा था– ''तुम्ही मेरी मां हो पति और मां''[8] अर्थात पति को सब कुछ मानने की मानसिकता यहां भी है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास ''चाक'' में रेशम की हत्या भी परम्पराएं अर्थात नियम कानून तोड़ने के कारण होती है। क्योंकि वह विधवा होकर भी प्रेम करती है और गर्भवती हो जाती है और अपने प्रेमी की उस संतान को स्वयं जन्म देना चाहती है और साथ ही रेशम किसी भी दबाव में आकर जेठ से विवाह के लिए तत्पर नहीं है और न ही वह अपने बच्चे को मारने को तैयार है सामाजिक दबाव में आकर अपने जेठ से विवाह करने को तैयार नहीं है। सामाजिक दबाव न मानने के कारण उसकी हत्या कर दी जाती है साथ ही इस उपन्यास में पुरूष की बनाई गई रेखा को लांघकर गुलकन्दी अपनी मर्जी से विवाह कर लेती है तो उसे अपना प्रायश्चित जान गवाकर करना पड़ता है।

ममता कालिया के उपन्यास ''तीन लघु उपन्यास'' में जया की सहेली यशा दकिया नुसी परम्पराओं में लदी फंसी एक नारी मन का प्रतिरूप है। विजतीय युवह मोहम्मद से प्रेम करने के कारण घर वाले उससे रूष्ट है सुशिक्षित होकर भी वह परम्पराओं को तोड़ने मरोड़ने में आसमर्थ है और अपने परिवार वालों के कहे अनुसार शादी लोहे के व्यापारी से कर लेती है।

जुल्मों का विरोध करती नारीः

नारी की सहनशीलता की प्रतिमूर्ति कहा जाता है और यह भी कहा जाता है कि जिंदगी के हर समस्याओं को उसे अकेले झेलना है। बचपन से उसे संस्कार दिये जाते उसे कुछ भी हो सहना चाहिए, किसी के विरोध में नहीं बोलना चाहिए। कुछ नारी अंदर घुटती है, मानसिक होती है तो कुछ नारी जुल्मों का विरोध अपने सीमित दायरे में करती हैं ज्यादा जुल्म होने पर तो खुलकर भी अपना विरोध व्यक्त करती हैं।

प्रभा खेतान के उपन्यास ''छिन्नमस्ता'' की प्रिया अपने पति के जुल्मों का जवाब देती है– मैं इनकम टैक्स सेल्स टैक्स, एक्साइज, तुम्हारे सारे बखेड़ों का खुले बाजार में भंड़ा फोडूगी और देखती हूं कि तुम कैसे बचते हो।[9]

मृदुला गर्ग के उपन्यास ''कठगुलाब'' में नमैदा अपना रौद्र रूप दिखाती है। इसने अपनी लड़ाई खुद लड़ी है। नर्मदा धीरे–धीरे दबंग होती चली गई थी जीजा से पीछा

छुड़ाने के बाद जीजा पीछा करते हुए स्वयं आया था। तो वह शेरनी की तरह दहाड़कर उठी थी– फिर कभी इस घर में आने की हिम्मत की तो दोनों टांगे तोड़कर सड़क पर फेक दूंगी। भड़वे जा अपनी बीबी के पल्लू में जा कर सो। मैं तेरी रखैल न थी तू मेरा रखैल था। क्या कमा के तुझे खिलाया मुसटंडे इसलिए कि तू मेरी बीबी मिल के मेरा हक मारो जा नामर्द समझकर अपना हिस्सा माफ किया। पर याद रख आ कर बसूल लूंगी।[10]

इस तरह लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में नारी मनोविज्ञान द्वारा अपनापन तलाशती नारी का, जुल्मों का विरोध करती नारियों का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

दांपत्य संबंध और नारीः

भारतीय समाज में दाम्पत्य जीवन को अत्यंत पवित्र माना गया है। पति–पत्नी का संबंध प्रायः सभी संबंधों का मूल है। विवाह केवल दो व्यक्ति को मिलना न होकर, दो संस्कारों का मिलन, दो परिवारों का मिलन है। हमारे परिवार ने पति को देवत्व का स्थान दिया हैं लेकिन शिक्षा के प्रसार ने नारी जाग्रत किया है। व्यास अन्याय को वह स्पष्ट रूप से समझ सकी है। वह आत्मनिर्भर होकर पति के एकाधिकार पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। पति पत्नी के बीच जटिल संबंधों को रेखांकन कर लेखिकाओं ने इन उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक विशिष्ट पहचान दी है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास ''दिलो दानिश'' में कुटम्ब प्यारी के पति कृपानारायण के संबंध एक अन्य स्त्री महकबानों से हैं सब कुछ जानते हुए भी कुटुम्ब प्यारी के घर भी अपने पति के साथ आती जाती है और महकबानों की बेटी की शादी में भी न चाहते हुए भी सहयोग देती है। यहां पर कुटुम्ब प्यारी अपने खानदान की मर्यादा और दाम्पत्य जीवन को बनाए रखने के लिये कोई ज्यादा विरोध नहीं करती हैं वह सिर्फ इतना कहती है– ''हमारे कुछ भी कहने से आप खीज उठते हैं हमरा गुनाह इतना है कि हम आप की बीबी हैं''।[11]

मृदुला गर्ग के उपन्यास ''अनित्य'' में अविजित की पत्नी श्यामा के संबंध अन्य पुरूषों से है यह अविजीत जानता है तथा अविजीत के शारीरिक संबंध संगीता से है वह श्यामा जानती है। अविजीत श्यामा को पहचानता है और श्यामा अविजीत को पहचानती है फिर भी पति–पत्नी के संबंधों में कोई तनाव नहीं हैं यहां पर लेखिका ने दाम्पत्य जीवन को बनाए रखने के लिए पति–पत्नी में एक सी मानसिकता को उजागर किया है। गीतांजलि श्री के उपन्यास ''माई'' में नारी का दाम्पत जीवन के प्रति प्रेम को उजागर किया गया है। इसमें नायिका माई की पूरी जिन्दगी घर, बच्चे पति और सास की सेवा करते बीत जाती है और फिर भी उसके माथे पर सिकन भी नहीं दिखाई देती हैं। दापत्य जीवन के लिये माई की समर्पित मानसिकता को चित्रित किया है। चित्रा मृदगल के उपन्यास ''एक जमीन अपनी'' में' सुधांसु अंकिता का पति नहीं प्रेमी था। जिसे पाने के लिये वह बहुत कठिन रास्तों से गुजरी है, लेकिन सुधांसु के परिवार वालों ने सदैव उसे प्रताड़ित लांक्षित किया है और सुधांसु ने उसे नजर अंदाज किया और एक वस्तु बनाकर घर में रखा।

ममता कलिया के ''तीन लघु उपन्यास'' के ''एक पत्नी के नोट्स में कविता का पति संदीप कविता की प्रसिद्धि से आघात होता हुआ कविता को भी मानसिक रूप आहात करने में सक्षम होता है। पति संदीप कविता के निजी व्यक्तित्व को चकनाचूर करने में जुटा हुआ होता है। फलतः कविता को निजी अस्मिता बनाए रखने के लिये संघर्ष करना पड़ता है। उपन्यास की निम्न पंक्तियां कविता की मानसिक हलचल का मूल रूप है– ऊपर से वह चुप और गंभीर रहती है लेकिन अंदर से हर वक्त व्याकुल और विचलित''[12]

प्रेम विवाह के पश्चात का मोह भंग कविता में साफ दिखाई देता है। दांपत्य संबंध को बनाए रखने के लिये परिवार की एकता और दंपतियों के बीच में एक दूसरे के समर्पण में है इस दांपत्य को बनाए रखने में नारी की मानसिकता द्वारा ही मनोविज्ञान ही सबसे आगे दिखाई देती है।

प्रथाएं अनेक पर कितनी नेक नारीः

प्रथाएं समूह द्वारा स्वीकृत नियंत्रण की ऐसी पद्धतियॉ है, जो इतनी सुदृढ़ हो जाती है कि उन्हें बिना सोचे समझे ही मान्यता दे दी जाती है और पीढ़ी हस्तांतरित हुई चली जाती है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास ''ऐ लड़की'' में अम्मू अपनी बेटी को परिवार में औरत की स्थिति के बारे में बताते हुए कहती है कि –''चलाई होती न परिवार की गाड़ी तुमने भी तो अब तक समझ गई होती कि गृहस्थी में शारी शोभा नामों की है। यह इसकी पत्नी है। बहू हैं मां है, नानी है, दादी है। फिर वही खाना, पहनना, और गहना। लड़की वह नाम की ही महारानी है। सब कुछ पोछ–पोंछ के उसे बिठा दिया जाता है। अपनी जगह पर।[13] अर्थात उसे शादी जैसे पवित्र

रिश्ते में बांधकर उस पर नियंत्रण किया जाता है।

आधुनिक युग में परंपरा से चली आ रही प्रथाओं के विषय में तरह–तरह के प्रश्न उठे हैं, परिवार, विवाह, धर्म, त्यौहार आदि संस्थाओं में भिन्न–भिन्न प्रथाएं होती है। यही पर ज्ञात होता है कि प्रथाएं एक पर कितनी नेक है नारी के लिए। इसका कोई विचार ही नहीं करता। क्योकि नारी की मानसिकता भी ऐसी हो गई है कि उसे इन प्रथाओं को निभाने में ही अपनी सादगी नजर आती है।

खालीपन व ऊबः

खालीपन का बोझ कई लेखिकाओं के उपन्यासों का हिस्सा है। संबंधों में अनुकुलता न होना, रूग्णता होना, व्यवस्था का अस्त व्यस्त होना आदि इस खालीपन के मुख्य कारण है। आज के मशीनी युग में अस्तित्ववादी चेतना की एक प्रवृत्ति ऊब के रूप में उभरी है। लेखिकाओं के उपन्यासों में यह ऊब अनुभव की जा रही है। कहीं रूग्णता के कारण, कहीं संबंधों की कृत्रिमता के कारण तो कहीं अनचाहे काम संबंधों के कारण, यह ऊब दिखाई देती है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास ''समय सरगम'' में दो पौढ़ पात्र आरण्या और ईशान है। आरण्या जीवन में शादी न करने के कारण पारिवारिक सुख से वंचित है दूसरी ओर ईशान एक विधुर है दोनों के जीवनव में खालीपन है अरण्या ईशान से कहती है –''और हम दो बुढ़ाते नश्वर''[14]

प्रभा खेतान के ''पीली आंधी'' में सोमा का अपने ससुराल में मन नहीं लगता क्योकि वह अपने रोजमर्रा के कामों में ऊब जाती है और उसके जीवन में एक बच्चे की कमी है। वह अपनी ताई सास से कहती है– नहीं मन नहीं लगता है। ऊब जाती हूं। एक बच्चा हो जाता तो मन लग जाता।[15]

मृदुला गर्ग के उपन्यास ''मैं और मैं'' मं माधवी का पति दिन रात अपने दवाइयों के कारखाने में व्यस्त रहता है और घर आकर भी फोन पर व्यस्त रहता है घर में किसी प्रकार कोई तनाव नहीं है फिर भी माधवी अकेलेपन महसूस करती है। शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यास ''अमलतास'' की कामदा शादी के बाद अपने पति को देखने के लिए तरस जाती है। और हमेशा उनकी प्रतीक्षा करती हुई स्वयं से कहती है– इस घर के छोटे सरकार कहा रहते है? क्या करते है? घर क्यों नहीं आते। इस उपन्यास में खालीपन का एहसास मनोविज्ञान है।

विवाह विच्छेद और पुनर्विवाहः

स्त्री विवाह विच्छेद से भी सुख नहीं पाती। पुनर्विवाह कठिन भी है और हुआ तब भी वह अपने पहले संबंध को मिटा नहीं सकती है। लेखिकाओं ने इन स्थितियों के भवर में फंसे नारी मनोविज्ञान की सार्थक अभिव्यक्ति दी है।

उषा प्रियंवदा के उपन्या ''शेषयात्रा'' में अनु की शादी अमेरिका के डाक्टर प्रणव कुमार से हो जाती है परन्तु कुछ समय बाद ही प्रणव अनु से ऊब कर घृणा करने लगता है। और वह अनु को तलाक दे देता हैं। इस प्रकार अनु का उसके पति से विवाह–विच्छेद हो जाता है लंबे संघर्ष के बाद वह आत्मनिर्भर हो जाती है नारी मनोविज्ञान विवाह विच्छेदन और पुनिर्विवाह में शिक्षा के स्वावलंबन से वह साहसी हुई है। और अपनी सहेली के भाई दीपाकर से पुनर्विवाह कर जीवन में पुनः सुखी हो जाती है।

निष्कर्षः

प्रमुख हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अभिव्यंजित ''नारी मनोविज्ञान'' नारी जीवन के विविध पहलुओं के दिगदर्शन कराने का भरपूर साहस किया गया है। इन पहलुओं में नारी मनोविज्ञान को उभारा गया है। नारी गरीब हो या शिक्षित वह जिन्दगी भर संघर्ष करती रहती हैं वह हर पहलू के कठिनाई से उभरती है। कई पहलुाओं में संघर्ष करके वह अपनी मंजिल को पा लेती है तो कहीं वह तनाव पूर्ण जीवन यापन करती है, अत्याचारों का सामना कारती है और आगे बढ़ती है। आज नारी का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व हैं। नारीमन की सूक्ष्मता और नारी मन का विश्लेषण अनेक पहलू में किया गया है, परन्तु दुःख पीड़ा वेदना, अत्याचार आदि की दृष्टि से उसकी मानसिकता आज भी संघर्षशील दिखाई पड़ती है ऐसा क्यों है उसकी ऐसी स्थिति क्यों है यह सभी नारी मनोविज्ञान है।

संदर्भः

1. गीतांजलि श्री, माई, ***राजकमल*** पेपरबैक्स, नई दिल्ली, प्र.सं., 2004, पृ. 35
2. प्रभा खेतान, ***छिन्नमस्ता,*** राजकमनल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, प्र.सं. 2010 पृ.115
3. शिवानी, ***अतिथि,*** राधाकष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.अवर्षति, 2006, पृ. 262
4. प्रभा खेतान, ***पीली आंधी,*** राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, प्रं.स. 2001, पृ. 187
5. शिवानी, ***कालिन्दी,*** राधाकृष्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. अवृति, 2006, पृ. 36
6. शिवानी, ***अतिथि,*** राधाकृष्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. अवृति, 2006, पृ. 159–160
7. राजी सेठ, ***निष्कवच,*** भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, ती.सं. 2005, पृ. 92
8. मृदुला गर्ग, ***राजकमल*** पेपरबैक्स, नई दिल्ली, प्र.सं. 2013, पष्ृ 167
9. प्रभा खेतान, ***पीली आंधी,*** राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, प्र.सं. 2001,पृ. 250
10. मष्दुला गर्ग, ***कठगुलाब,*** भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, छ.सं. 2010, पृ. 168
11. कृष्णा सोबती, ***दिलो–दानिश,*** राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, प्र.सं. 2006, पृ. 54
12. ममता कालिया, ***तीन लघु उपन्यास,*** किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ला, प्रं.सं. 2008, पृ. 16
13. कृष्णा सोबती, ***ऐ लड़की,*** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2008, पृ. 57
14. कृष्णा सोबती, ***समय सरगम,*** राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, प्र.सं. 2008, पृ.15
15. प्रभा खेतान, ***पीली आंधी,*** राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, प्र.सं. 2001, पृ. 235